निजी औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत दैनिक मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक एवं स्वास्थ्य समस्याएँ

(गोरखपुर जनपद के गीडा औद्योगिक क्षेत्र के दैनिक मजदूरों के विशेष सन्दर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

श्रवण कुमार*

प्रस्तावित शोध कार्य के द्वारा यह जानने का प्रयास किया जाना है कि –'निजी औद्योगिक इकाईयों में कार्यरत दैनिक मजदूरों की सामाजिक, आर्थिक समस्यायें क्या है तथा इन समस्याओं का मजदूरों के सामाजिक पारिवारिक जीवन एवं स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।'

भारत में औद्योगिक विकास प्रमुख रूप से दक्षिणी राज्यों में हुआ है। तुलनात्मक रूप से उत्तरी क्षेत्र काफी पीछे है। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पूर्वांचल के समुचित औद्योगिक विकास के लिए समय –समय पर अनेक योजनाऐं लागू की गयी, परन्तु क्षेत्र का अपेक्षित औद्योगिक विकास कतिपय कारणों से नहीं हो पाया। वास्तव में गोरखपुर और इसके आस –पास के क्षेत्रों में चीनी मिलें तथा छोटें–मोटें लघु उद्योगो के अलावा अन्य बड़ी योजनाओं का अभाव हैं। अतः समग्र एवं सुनियोजित औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) की स्थापना वर्ष 1989 में की गयी। योजना के अनुरूप 10,000 एकड़ भूमि को अगले 20 वर्षो में (सन् 2012 तक) समस्त महानगरीय सुविधाओं सहित विकसित करने का लक्ष्य रखा गया था। समस्त गीडा क्षेत्र का क्षेत्रफल 4467.84 हेक्टेयर है। जिसमें औद्योगिक क्षेत्र का क्षेत्रफल 940.00 हेक्टेयर निर्धारित है। कुल क्षेत्रफल का 21.04 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र के अर्न्तगत है। इसका मुख्यालय गोरखपुर में स्थित है।

वर्तमान में गोरखपुर जनपद में स्थित औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) के अर्न्तगत उत्पादनरत कुल औद्योगिक इकाईयों की संख्या '129' है। जिनमें प्रत्यक्ष सूचित रोजगार '2357' है। जिनमें अधिकतम संख्या दैनिक मजदूरों की है।

इस शोध पत्र में सर्वप्रथम गीड़ा के दैनिक मजदूरों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का विभिन्न सन्दर्भो में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की उम्र ,आय, जाति पद धर्म शैक्षिक योग्यता वेतन इत्यादि अलग–अलग हैं अतः उनकी सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में पर्याप्त भिन्नता सम्भव है।

सारिणी संख्या 1.1

उत्तरदाता श्रमिकों की आयु (उम्र) समूह (वर्ष में)

आयु समूह वर्ष में	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
25 वर्ष से कम	15	6.52
26से 30	23	10.00
31 से 35	42	18.26
36 से 40	48	20.87
41 से 45	46	20.00
46 से 50	26	11.30
51 से 55	20	8.70
56 से अधिक	10	4.35
योग	**230**	**100**

* शोध छात्र, (समाजशास्त्र विभाग), शिबली नेशनल कालेज, आजमगढ़

उपरोक्त तालिका के आधार पर देखा जा सकता है कि गीड़ा में दैनिक मजदूरों में उत्तरदाताओं में सर्वाधिंक संख्या 36 से 40 वर्ष आयु समूह के मजदूरों की है। 41 से 45 वर्ष आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या उनसे थोड़ा ही कम (20 प्रतिशत) है। जबकि 56 से अधिक आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या सबसे कम (4.35 प्रतिशत) है।

सारणी संख्या 1.2

उत्तरदाता श्रमिक की धार्मिक स्थिति

धर्म	संख्या	प्रतिशत
हिन्दू	195	84.78
इस्लाम	30	13.05
अन्य	05	02.17
कुल	**230**	**100**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि इनमें हिन्दू धर्मावलम्बियों की बहुलता है जो एक तरह से क्षेत्र की जनसंख्या के अनुरूप ही है इस्लाम और अन्य धर्मावलम्बियों की संख्या काफी कम है।

सारणी संख्या 1.3

उत्तरदाता मजदूरों की जाति सम्बन्धी सारणी

जति समूह	संख्या	प्रतिशत
सामान्य वर्ग	56	24.35
अन्य पिछड़ा वर्ग	104	45.22
अनुसूचित जातियां	70	30.43
कुल	**230**	**100**

अनुसंधान क्षेत्र गीड़ा के चयनित प्रतिदर्श के 230 उत्तरदाताओं में से सामान्य पिछड़े और अनुसूचित जाति का प्रतिशत क्रमशः 24.35 , 45.22 तथा 30.43 प्रतिशत है।

अतः उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि पिछडे वर्ग के उत्तरदाता श्रमिक सबसे अधिक और सामान्य वर्ग के सबसे कम है।

सारणी संख्या 1.4

उत्तरदाता श्रमिको के शैक्षिक स्तर सम्बन्धी सारणी

श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर	श्रमिकों की संख्या			प्रतिशत		
	कुल	स्त्री	पुरूष	कुल	स्त्री	पुरूष
अशिक्षित	15	08	07	6.52	32	3.41
प्राथमिक	20	12	08	08.70	48	3.90
मिडिल	23	05	18	10.0	20	8.78
हाईस्कूल	49	—	49	21.30	—	23.90
हाईस्कूल/आई टी आई	60	—	60	26.09	—	29.27
इण्टर	40	—	40	17.39	—	19.52

इण्टर / आई टी आई	20	–	20	08.70	–	09.76
स्नातक	03	–	03	01.30	–	01.46
अन्य	–	–	–	–	–	–
कुल	**230**	**25**	**205**	**100**	**100**	**100**

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि गीड़ा में कार्यरत दैनिक मजदूरों का शैक्षणिक स्तर काफी निम्न है उत्तर दाताओं में केवल 1.3 प्रतिशत स्नातक है जबकि 6.52 प्रतिशत अशिक्षित है प्राथमिक और मिडिल उर्तीण उत्तरदाताओ की कुल प्रतिशत 18.7 है तो हाई स्कूल व इण्टर उत्तरदाताओं की कुल प्रतिशत 38.69 है इसी वर्ग के प्रशिक्षित मजदूरों का कुल प्रतिशत 34.79 है।

सारिणी संख्या 1.5

उत्तरदाता दैनिक मजदूरों की मासिक आय

मसिक आय रू0 में	मजदूरों की संख्या	प्रतिशत
4000 – 5000	27	11.74
5001 – 6000	22	09.56
6001 – 7000	41	17.83
7001 – 8000	65	28.26
8001 – 9000	60	26.09
9001 –10000	10	4.35
10000 – से अधिक	05	2.17
योग	**230**	**100**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि मजदूरों क वेतन में पर्याप्त भिन्नता है लगभग 54 प्रतिशत मजदूरो का वेतन 7001 से 9000 तक है। इससे उच्च वेतन प्राप्त करने वाल 60.52 प्रतिशत है। बाकि सभी उससे कम वेतन प्राप्त करते है।

सारिणी संख्या 1.6

उत्तरदाताओं दैनिक मजदूरों की कार्य की दशाएं

कार्य दशाएं	संख्या	प्रतिशत
बहुत अच्छी	–	–
अच्छी	10	4.35
संतोषजनक	69	30.00
असंतोष जनक	151	65.65
कुल	**230**	**100**

सारिणी से स्पष्ट है कि एक भी दैनिक मजदूर ने अपनी कार्यदशा को बहुत अच्छा नही मानते। केवल 10 अर्थात् 4.34 प्रतिशत उततरदाता अपनी कार्यदशा को अच्छा मानते है। 69 उत्तरदाता जो 30 प्रतिशत है अपनी कार्यदशा को संतोष जनक मानते हैं। 151 उत्तरदाता अर्थात् लगभग दो तिहाई 65.65 प्रतिशत उततरदाता अपनी कार्यदशा से असंतुष्ट है।

इन मजदूरों की समस्याओं को उठाने के लिए किसी प्रकार का कोई श्रमिक संगठन भी नही है क्योंकि ये स्वयं असंगठित क्षेत्र के अन्तर्गत काम करते है। अतः इन्हे मदद की आवश्यकता होती है उस समय न तो मिल मालिक न श्रमिक संगठन और न ही राज्य अथवा केन्द्र सरकार इनके सहयोग के लिए उपलब्ध रहती है यही कारण है कि वे अपनी कार्य दशा से असंन्तुष्ट है।

संक्षेप में कहें तो 'गीडा' के दैनिक मजदूरों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि तथा उनकी कार्यदशाओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि इसमें से अधिकांश मजदूर अति सामान्य पृष्ठभूमि के है इनके शिक्षा का स्तर भी भिन्न है ये आय के निम्न पायदान पर स्थित है इनकी सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि क्षेत्र की सामान्य प्रकृति के अनुकूल है। यहॉ लैंगिक आधार पर पुरूषों की बहुलता है तथा जातिगत आधार भी लगभग उनकी जनसंख्या के अनुरूप ही है आधिकांश एकाकी परिवार से आते है और ये निम्न वेतन प्राप्त करते है (अधिकांश 8000 से कम) इनके स्थल पर शुद्ध पेयजल, विश्रामालय, स्नानागार/ शौचालय आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है पर ये अपने कार्य दशा से घोर असन्तुष्ट हैं क्योंकि ये अस्थायी कर्मचारी है और घोर असुरक्षा के मध्य जीवन व्यतीत करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकारण (गीड़ा) के सूची दिनांक 30.04.2006 के अनुसार
2. ए0आ0, देसाई ''रूरल सोशियोलाजी इन इण्डिया'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1969 पृ0 33
3. एम0एन0 श्रीनिवास ''सोशल चेन्ज इन मार्डन इण्डिया'' ओरियन्ट लौंगमेन्स बम्बई 1982 पृ0 117
4. डॉ0 के0 शर्मा, औद्योगिक समाजशास्त्र –एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड ड्रिस्ट्रीब्यूटर नई दिल्ली –2002 पृ0 349

●